मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- नगर निगम को लूट की जागीर मान कर कमीशनखोरी के लिये खरीदा था लाखों का लोहा खुल्लर ने — 3
- आरएसएस की सत्ता के खिलाफ व्यापक वाम मोर्चा वक्त की ज़रूरत — 4
- कैराना की बिसात पर भाजपा-संघ की तैयारी — 5
- करोड़ों हड़पने वाला गया जेल, विधायक के भी हुए कुत्ते फ़ेल — 8

वर्ष 29 | अंक 15 | फरीदाबाद, वीरवार 16-30 जून 2016 | फोन : - 9999595632 | 2 ₹

मथुरा के आश्रम का खूनी खेल कहीं फ़रीदाबाद में भी न दोहराया जाय

पाखंडी से आशीर्वाद लेता पुलिस कमिश्नर

ज़िले की सुरक्षा का भार सम्भालने के लिये सरकार ने सीपी (पुलिस कमिशनर) को दर्जनों बड़े अफ़सर व 3000 के करीब पुलिस बल दे रखा है। इसके बावजूद सीपी हनीफ़ कुरैशी का मथुरा के रामवृक्ष यादव टाइप बाबों की शरण में जाना नियाहय ही शर्मनाक है। दिनांक 3 जून को स्थानीय सिद्धदाता आश्रम के पाखंडी बाबा की शरण में जाकर सीपी ने अपने पुलिस बल की क्षमता की अपेक्षा उस बाबे के चमत्कार में ज़्यादा विश्वास प्रकट किया है। उनके इस कृत्य से न केवल उनके मातहत कार्यरत पुलिसकर्मियों का मनोबल गिरा है बल्कि जनता में भी यह सदेश जाता है कि सरकार एवं पुलिस की अपेक्षा, अंधविश्वास फ़ैलाने व धर्म की दुकानदारी करने वाला बाबा, उनकी सुरक्षा करने में कहीं अधिक सक्षम है।

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो फ़रीदाबाद

आशीर्वाद लेने के पश्चात सीपी साहब आश्रम के संस्थापक बाबा सुदर्शनाचार्य की समाधी पर भी माथा रगड़ने पहुंचे। इस सुदर्शनाचार्य के बारे में सीपी साहब जान लें कि 30-35 वर्ष पूर्व वह सेक्टर 16 के एक किराये के मकान में रहता था और उसकी वाहियात हरकतों से पूरा मोहल्ला परेशान रहता था। अकसर वहां झगड़ा भी होता था। तत्कालीन मुख्यमंत्री भजनलाल की कृपा से उसे आश्रम की जगह पर यहां एक छोटा सा प्लॉट देकर बसाया गया था। वही प्लॉट अब अवैध रूप से फ़ैल-फ़ैल कर विशाल प्लॉट बन गया है। इतना ही नहीं तत्कालीन कॉम्पलेक्स प्रशासन के मुख्य प्रशासक आर के रंगा जब कभी घूमते-फिरते इस आश्रम पर जाते थे तो सुदर्शनाचार्य बाकायदा उनके चरण स्पर्श किया करता था।

सीपी साहब को इस बात का भी इल्म होना चाहिये कि सुदर्शनाचार्य के मरने के पश्चात आश्रमरूपी इस जायदाद पर कब्ज़े के लिये वारिसान में काफ़ी झगड़े चल रहे हैं। मामला पुलिस तक भी पहुंचा था। सुदर्शनाचार्य के दोनों बेटों में से बड़ा गद्दी पर काबिज है जबकि छोटा भी रहता तो वहीं पर है परन्तु गद्दी की मलाई से दूर। इसी मलाई को लेकर दोनों गुटों में जबरदस्त मारपीट हो चुकी है और दोनों तरफ़ से थाना सुरजकुंड में फ़ौजदारी मुकदमें दर्ज हैं। इसमें दोनों पक्षों के करीब 15-15 लोग जमानतों पर हैं। सीपी साहब के लिये यह जान लेना भी जरूरी है कि अवैध कब्ज़े को लेकर इन्हे सरकार की ओर से नोटिस बरसो पहले ज़ारी हो चुके हैं। एक बार तो तोड़-फ़ोड़ दस्ता कार्यवाही

हनीफ कुरैशी से तो ऐसी उम्मीद न थी

करने पहुंच भी गया था। लेकिन राजनीतिक दखलंदाज़ी के चलते कार्यवाही कुछ खास हो नहीं पाई थी। हालांकि देर-सबेर होनी तो जरूर है।

झूठ व जूमलेबाज़ी के द्वारा भोली-भाली जनता को उल्लू बनाकर वोट बाटोरने वाले पाखंडी नेताओं का तो ऐसे मठों व आश्रमों पर आना बनता हैं, क्योंकि जनता को ठगने के लिये दोनों को एक दूसरे की जरूरत रहती है। इसके अलावा काले धंधे करने वाले व्यापारी व अफ़सरों का भी इन मठों में मत्था टेकना समझ में आता है; परन्तु हनीफ़ कुरैशी जैसे पढे-लिखे, ईमानदार एवं सुलझे हुए अफ़सर द्वारा यहां मत्था रगड़ना समझ से परे है। या फ़िर हो सकता है इनके बारे में जो उक्त धारणा बनी थी वही ग़लत हो। इस्लाम के नजरिये से भी उनका यह कृत्य पूरी तरह नाजायज है। यदि अपनी धर्मनिरपेक्षता सिद्ध करने के लिये वे वहां गये थे तो भी इस पाखंड को जायज नहीं ठहराया जा सकता। धर्मनिर्पेक्षता सिद्ध करने के और बहुत तरीकें हैं।

लगता है कुरैशी साहब बाबा के जनसम्पर्क अधिकारी की बातों में फ़ंस गये। अपनी दुकानदारी को बढावा देने के लिये बाबा ने बाकायदा जनसम्पर्क एवं प्रचार का काम एक 'पत्रकार' सौरभ भारद्वाज को सौंप रखा है। भारद्वाज का दायित्व है कि बाबा के आश्रम में बड़े-बड़े लोग़ों को दर्शन के लिये लाये, तमाम छोटे-बड़े अखबारों में बाबा व आश्रम का गुणगान कराये। इसी नजरिये से सीपी साहब का उक्त फ़ोटो अखबारों में छपवाया गया है। यानी एक ओर जनता की निगाह में बाबा का कद काफ़ी बढ गया और सीपी का रसातल में चला गया।

हिसार के बरवाला में रामपाल भी आश्रम ही चलाता था और आसाराम भी जो आज दोनों जेल में हैं। सिरसा का राम रहीम भी आश्रम की आड़ में काले धंधे करने के आरोप में मुकदमों का सामना कर रहा है। मथुरा में अभी हाल ही में जो काण्ड हुआ है वह भी बाबा 'जय गुरूदेव' के एक चेले का ही भोले-भाले गरीब लोगों को उल्लू बना कर किया धरा था। गुनाहों से कलंकित बाबों की इतनी बड़ी संख्या हो चुकी है कि अब हर बाबा गुनाहों का देवता नज़र आने लगा है। क्या हनीफ़ कुरैशी यह भी पता करेंगे कि सिद्धदाता आश्रम भी मथुरा का खूनी आश्रम सिद्ध होने की तरफ़ तो नहीं बढ रहा!

ख़बर दार

बोलने वाला प्रधानमंत्री!

आजकल फ़ेसबुक पर छह शब्दों की कहानी लिखने का चलन है। इसी क्रम में भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने प्रधानमंत्री मोदी के अमेरिकी कांग्रेस में दिये भाषण से उत्साहित होकर अपनी छह शब्दों की कहानी इस प्रकार लिखी-हमने देश को बोलनेवाला प्रधानमंत्री दिया। शब्द सीमा के कारण वे 'बोलनेवाला' से पहले 'केवल' नहीं जोड़ सके। काफ़ी लोग़ों का कहना है कि बजाय बोलने वाला कहने के मोदी को बकबक करने वाला कहना चाहिये। इन आयामों पर मज़दूर मोर्चा ने अमित शाह से काल्पनिक साक्षात्कार लिया।

म.मो.-अमितशाह जी आप लोग नरेन्द्र मोदी को बोलनेवाला प्रधानमंत्री क्यों कहते हैं ? उनसे पहले के सभी प्रधानमंत्री भी गूंगे तो नहीं थे ?

अमितशाह-मोदी जी से पहले 10 साल मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री रहने का कुछ तो फ़ायदा हमें उठाना था। सभी जानते हैं कि मनमोहन सिंह की स्थिति गूंगे जैसी ही थी। लिहाज़ा मोदी को बोलनेवाला प्रधानमंत्री आसानी से सिद्ध किया जा सकता है। यह तो हम भी जानते हैं कि हर प्रधानमंत्री को विभिन्न सभाओं व समारोहों में भाषण देना ही पड़ता है। मोदी भी यही कर रहे हैं।

म.मो.-पर 'बोलनेवाला' कहने में ऐसी कौन सी बड़ी खूबी हुई ? लोगों ने मोदी को बोलने के गुण के लिये ही तो नहीं चुना ?

अमितशाह-अरे समस्या तो यही है। मोदी को एक मजमेबाज़ की तर्ज पर बोलने के अलावा और तो कुछ आता भी नहीं अब उनकी तारीफ़ में कुछ कहना हो तो भला क्या कहें।

म.मो.-क्या आप भी मानते हैं कि जो रोज-रोज मोदी सरकार की ओर से घोषणायें की जा रही हैं उन पर खास कुछ नहीं हो रहा ?

अमितशाह-नहीं, हम ऐसा नहीं मान सकते। इन घोषणाओं को लेकर जम कर विज्ञापनबाज़ी हो रही है। तमाम मन्त्रियों को देश के दौरों पर भेजा गया है कि वे लोग़ों के बीच मोदीगान कर सकें। यहां तक कि अमेरिकी कांग्रेस में भी मोदी के भाषण पर 3 मिनट 42 सेकेंड तक तालियां बजी। यानी इतना कुछ हो रहा है मोदी की घोषणाओं पर।

म.मो.-अमेरिकी कांग्रेस पर तो आपके मोदी ने दूसरों का लिखा भाषण पढ दिया था। इसमें भला क्या खास बात हुई ?

अमितशाह-अरे भाई अब इसके बाद तुम लोग मोदी की डिग्री पर तो प्रश्न चिन्ह नहीं खड़ा कर पाओगे। जो व्यक्ति इतने आत्म विश्वास से नकल बांच सकता है, उसके लिये बीए और एमए करना क्या मुश्किल।

म.मो-क्या आपको नहीं लगता कि अमेरिका ने अपनी मुनाफ़ाखोरी मज़बूत करने के लिये मोदी को चने के झाड़ पर चढ़ा दिया है ? भारत को अमेरिका के एक तरफ़ा व्यापारिक एवं सामरिक हितों से नत्थी करने की बड़ी कीमत हमारी जनता को चुकानी पड़ेगी।

अमितशाह-कुछ भी कह लो, कीमत तो सदा जनता ही चुकाती आई है। हम तो 2019 में बोरिया-बिस्तर बांध कर चलते बनेंगे।

अमेरिकी कांग्रेस में इन्दिरा गांधी का भाषण नहीं हुआ

अमेरिकी कांग्रेस को सम्बोधित करने का 'सम्मान' पाने वाले नरेन्द्र मोदी भारत के छठे प्रधानमंत्री हैं। उनसे पहले नेहरू, राजीव गांधी, नरसिंम्हा राव, अटल बिहारी बाजपेयी और मनमोहन सिंह भी सम्बोधन के लिये वहां बुलाये जा चुके हैं। हर सम्बोधन में तालियां बजाते और खड़े होकर अभिवादन करते अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों को देखा जा सकता है। यह उनकी आम परम्परा है।

सवाल है कि इस सूची में इन्दिरा गांधी जैसी कद्दावर प्रधानमंत्री का नाम क्यों नहीं है ? इसका जवाब जानने के लिये यह जानना जरूरी है कि उपरोक्त महानुभावों का नाम सूची में क्यों है ?

अमेरिकी कांग्रेस में किसी को यूं ही नहीं बुलाया जाता। उससे अमेरिका का कोई न कोई हित-साधन जुड़ा होता है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू तीसरी दुनिया के सर्वमान्य नेताओं में से एक थे। उन्हें गुट-निर्पेक्षता की गोलबंदी का जनक माना जाता है। लिहाज़ा, उन्हें बुला कर तो अमेरिकी कांग्रेस ने खुद अपनी शान में चार चांद ही लगाये थे। राजीव गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी दोनों पश्चिमोन्मुखी थे जबकि नरसिम्हाराव और मनमोहन सिंह ने भारतीय अर्थव्यवस्था को, विशेषकर रक्षा सौदों में, पूरी तरह अमेरिकी मुनाफ़े से नत्थी कर दिया था। रहे नरेन्द्र मोदी, तो उनसे बड़ा दर पर बिछने वाला चमचा अमेरिका को कहां मिलेगा ? ग्लोबल थानेदार अमेरिका के लिये एक स्वामीभक्त चौकी इन्चार्ज भारतीय प्रधानमंत्री!

अब आप समझ गये होंगे कि इन्दिरा गांधी को अमेरिकी कांग्रेस में क्यों नहीं आमन्त्रित किया गया। एक तो उन्होंने 1971 के बांग्लादेश युद्ध के दौरान अमेरिकी सातवें बेड़े की हिन्द महासागर में बंदर घुड़की को करारा जवाब देकर अमेरिका को उसकी औकात बताने का 'दु:साहस' किया था। दूसरे, लाख अमेरिकी दबाव के बावजूद इन्दिरा ने भारत को एक ऐसा पेटेंट एक्ट बना कर दिया, जिसके दम पर देश के किसानों ने हरित क्रान्ति की और दवा उद्योग ने सस्ती दवायें उपलब्ध कराई। इन दो कामों के लिये जहां भारत की आम जनता इन्दिरा की सदैव ऋणी रही, वहीं अमेरिका ने उन्हें हमेशा शक की निगाहों से देखा।

इन्दिरा गांधी ने एक और बड़ा अमेरिका को मुंह चिढ़ाने वाला काम किया था-पोखरण में चुपचाप परमाणु विस्फ़ोट करके और इस तरह भारत को पाकिस्तान के मुकाबले बड़ी सैन्य शक्ति के रूप में स्थापित कर। हालांकि यह लाभ अटल बिहारी वाजपेयी ने पोखरण-II करके गंवा दिया क्योंकि तब पाकिस्तान को भी परमाणु विस्फ़ोट करने का बहाना मिल गया। ऐसी इन्दिरा को भला क्यों बुलाती अमेरिकी कांग्रेस!